International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत का स्वतंत्रता संग्राम और अमेरिका : अमेरिका की घरेलू राजनीति और भारतीय समुदाय

डॉक्टर नमिता कुमारी

असिस्टेंट प्रफ़ेसर, एस॰पी॰एम॰ कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

सार

यह शोध पत्र ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता संघर्ष में अमेरिका द्वारा निभाई गई बहुआयामी भूमिका का अन्वेषण करता है। यह तीन प्रमुख पहलुओं पर विचार करता है: कूटनीतिक आयाम, अमेरिकी राजनीतिक दलों के विचारधाराओं का प्रभाव , और भारतीय अमेरिकी प्रवासी समुदाय के योगदान।

यह शोध पत्र इस बात का अध्ययन करता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रणनीतिक आवश्यकताओं और बदलते वैश्विक परिदृश्य के प्रभाव से कैसे अमेरिकी सरकार का भारत की आज़ादी के प्रति रुख बदला। यह रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टियों के विपरीत दृष्टिकोणों का भी विश्लेषण करता है, जिन पर उनकी क्रमशः रुढ़िवादी और उदारवादी विचारधाराओं का प्रभाव था, और इसका कि उन्होंने विनिर्मुक्ति और भारत की स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति अपने दृष्टिकोणों को कैसे आकार दिया।

इसके अलावा, यह शोध गदर पार्टी जैसे भारतीय अमेरिकी कार्यकर्ताओं, अमेरिकी बुद्धिजीवियों और संगठनों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है, जिन्होंने अमेरिका में समर्थन जुटाया, क्रांतिकारी विचारों का प्रसार किया और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ एकजुटता को बढ़ावा दिया। सैमुएल स्टोक्स और विलियम जेनिंग्स ब्रायन जैसे प्रमुख अमेरिकियों की आवाज़ों पर भी विचार किया गया है, जिन्होंने जनमत और भारत के कारण के समर्थन में अपनी भूमिका रेखांकित की।

अंत में, यह शोध पत्र भारत की स्वतंत्रता आंदोलन में अमेरिका के विविधतापूर्ण और बहुआयामी योगदान को रेखांकित करता है, जिसमें भू-राजनीति, विचारधारा और राष्ट्रीय सीमाओं से परे सक्रिय भागीदारी की जटिलता अंतर्निहित है।

Key words- स्वतंत्रता आंदोलन, अमेरिका, भारत, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन

परिचय

संयुक्त राज्य अमेरिका की भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी और रुचि समय के साथ धीरे-धीरे विकसित हुई। शुरुआत में, अमेरिकी मुख्य रूप से भारत के बारे में ब्रिटिश आख्यान और दृष्टिकोण से अधिक परिचित थे। हालांकि, जैसे-जैसे 20वीं सदी आगे बढ़ी, कुछ प्रगतिशील अमेरिकी भारत की राजनीतिक स्थिति और उसके स्वतंत्रता संग्राम के बारे में जागरूक होने लगे।

द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत ने अमेरिकी नीतिगत विचारों में भारत के स्वतंत्रता के मुद्दे को सबसे आगे ला खड़ा किया। अमेरिकी प्रशासन ने युद्ध प्रयासों में भारतीय भागीदारी के महत्व को महसूस किया। हालांकि, उस समय अंग्रेज भारतीय राष्ट्रवादियों को कोई रियायतें देने को तैयार नहीं थे, जिससे अमेरिकियों के लिए एक नीतिगत दुविधा पैदा हो गई।

इससे निपटने के लिए, अंग्रेज, अमेरिका और भारत के बीच सीमित राजनयिक संबंध स्थापित करने पर सहमत हुए। सर गिरजा शंकर बाजपाई को वाशिंगटन में एजेंट-जनरल के रूप में नियुक्त किया गया, जबकि थॉमस विल्सन नई दिल्ली में अमेरिकी आयुक्त बने।

राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट भारत के साथ बेहतर संबंधों के प्रबल हिमायती थे। दिसंबर 1941 में अमेरिका के द्वितीय विश्व युद्ध में प्रवेश करने के बाद, उन्होंने विंस्टन चर्चिल के साथ भारत के मामले को लगातार उठाया। हालांकि, चर्चिल भारत को राजनीतिक स्वतंत्रता या स्वायत्तता देने के बारे में अड़े रहे। अंग्रेजों को मनाने के अपने प्रयासों में, रूजवेल्ट ने दो दूतों, लुई जॉनसन और विलियम फिलिप्स को नियुक्त किया, जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं के साथ व्यापक रूप से जुड़ाव किया। उनकी रिपोर्टें भारतीय कारण के प्रति सहानुभूतिपूर्ण थीं और ब्रिटिश इरादों के लिए आलोचनात्मक थीं। अमेरिकी जनसंचार माध्यम भी आम तौर पर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समर्थक थे, और महात्मा गांधी एक प्रसिद्ध व्यक्ति थे।

हालांकि, द्वितीय विश्व युद्ध की जटिलताओं के कारण, अमेरिका भारत की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटेन पर पर्याप्त दबाव नहीं डाल सका। 1942 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के "भारत छोड़ो आंदोलन" शुरू करने के फैसले ने एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया, जिसने रूजवेल्ट प्रशासन को ब्रिटेन और भारत के बीच चयन करने के लिए मजबूर कर दिया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, रूजवेल्ट के निधन और ब्रिटेन में लेबर पार्टी के उदय के साथ, भारत को सत्ता हस्तांतरण निश्चित लगने लगा। युद्ध के बाद के मुद्दों से जूझ रहे अमेरिका शुरू में 1946 तक दक्षिण एशियाई स्थिति से अलग रहा। जैसे-जैसे युद्ध समाप्त हुआ, अमेरिका शीत युद्ध की ओर अग्रसर हुआ। भारत सामरिक महत्व का केंद्र बन गया क्योंकि यह सोवियत संघ के प्रभाव क्षेत्र को रोकने के लिए

महत्वपूर्ण था। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, अमेरिका और भारत दोनों ने शीत युद्ध की राजनीति के दायरे में अपने संबंधों को फिर से परिभाषित किया।

कूटनीतिक आयाम: संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार और भारत की स्वतंत्रता

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के काल में अमेरिका और भारत के बीच संबंध जटिल और बहुआयामी था। अमेरिका के शुरुआती वर्षों में, भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के प्रति अमेरिकी रवैये, विभिन्न कारकों जैसे भूराजनीतिक विचारों, वैचारिक मूल्यों और आर्थिक हितों से प्रभावित थे। 18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी की शुरुआत के दौरान, जब अमेरिका वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित होने की कोशिश कर रहा था, अमेरिकी नेताओं को भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व के निहितार्थों को लेकर संघर्ष करना पड़ा।

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के प्रति अमेरिकी रवैये को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक भू-राजनीतिक विचार था। एक नवोदित राष्ट्र के रूप में, अमेरिका वैश्विक मंच पर अपनी स्वतंत्रता और संप्रभुता को स्थापित करना चाहता था। कुछ अमेरिकी नीति निर्माता, भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद को वैश्विक स्थिरता के लिए खतरा और एशिया में अमेरिकी प्रभाव के विस्तार में बाधा मानते थे। वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद से सावधान थे और इसकी क्षमता से डरते थे कि यह इस क्षेत्र में अमेरिकी हितों को कमजोर कर सकता है। उदाहरण के लिए, 1786 में थॉमस जेफरसन को लिखे एक पत्र में, जॉन एडम्स ने भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद को लेकर चिंता व्यक्त की, लिखते हुए, "मुझे डर है कि ईस्ट इंडिया कंपनी एक राजनीतिक बुराई और व्यापारिक प्रतिद्वंद्वी है।" एडम्स के शब्द भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं को लेकर कुछ अमेरिकी नेताओं में मौजूद आशंका को दर्शाते हैं।

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के प्रति अमेरिकी रवैया, वैचारिक सिधांतों और मान्यताओं , विशेष रूप से स्वतंत्रता, लोकतंत्र और आत्मनिर्णय से भी प्रभावित रहा । अमेरिका के संस्थापक सिद्धांतों ने व्यक्तियों के अपने आप को शासित करने और विदेशी उत्पीड़न का विरोध करने के अधिकारों पर जोर दिया। कुछ अमेरिकी नेता भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई और अमेरिकी क्रांति के बीच समानताएं देखते थे, और भारत की आजादी की तलाश को अमेरिका की स्वतंत्रता की अपनी लड़ाई का एक स्वाभाविक विस्तार मानते थे। 1821 में कांग्रेस को एक भाषण में, विदेश मंत्री जॉन क्विंसी एडम्स ने इस भावना को व्यक्त किया, कहते हुए, "जहां भी स्वतंत्रता और आजादी का झंडा लहराया गया है या लहरायेगा, वहां उसका दिल, उसकी आशीर्वाद और उसकी प्रार्थनाएं होंगी।" एडम्स के वचन उन कुछ अमेरिकी नीति निर्माताओं के बीच यह विश्वास दर्शाते हैं कि संयुक्त राज्य को आत्मनिर्णय की लड़ाइयों का समर्थन करना चाहिए और उपनिवेशवादी उत्पीड़न का विरोध करना चाहिए, जिसमें भारत भी शामिल है।

इसके अलावा, भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के प्रति अमेरिकी रवैये आर्थिक हितों से भी प्रभावित हुए। एक उभरती औद्योगिक और वाणिज्यिक शक्ति के रूप में, अमेरिका वैश्विक बाजारों और कच्चे माल तक पहुंच चाहता था। कुछ अमेरिकी नीति निर्माताओं ने भारत के संसाधनों और बाजारों पर ब्रिटिश नियंत्रण को अमेरिकी आर्थिक विस्तार और व्यापार के लिए एक बाधा माना ।

1815 में राष्ट्रपति जेम्स मेडिसन को लिखे एक पत्र में, विदेश मंत्री जेम्स मुनरो ने लिखा, "हमारी व्यापारिक नीति का प्रमुख उद्देश्य हमारे व्यापार के लिए सबसे बड़ा क्षेत्र खोलना और उसके विपरीत कम से कम बाजार बंद करना होना चाहिए।" मुनरो के शब्द अमेरिकी नेताओं द्वारा मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास के लिए बाधाओं को दूर करने, जिसमें भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद द्वारा लगाई गई बाधाएं भी शामिल हैं, पर दिए गए जोर को दर्शाते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध का भारतीय नीति पर प्रभाव

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ दशकों तक चले भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से भी समर्थन प्राप्त किया। हालांकि, संयुक्त राज्य अमेरिका ने प्रारंभ में सतर्क दृष्टिकोण बनाए रखा। परंतु द्वितीय विश्व युद्ध एक ऐसा मोड़ प्रदान किया , जिसने भारत की ओर अमेरिका को अपनी नीति का पुनर्मूल्यांकन करने को मजबूर किया। फ्रैंक्लिन डी. रूजवेल्ट ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत का रणनीतिक महत्त्व माना। एक एकीकृत और संगठित भारत युद्ध प्रयास के लिए महत्त्वपूर्ण मानव संख्या और संसाधनों का एक विशाल सागर प्रस्तुत करता था। रूजवेल्ट युद्ध के दौरान प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल के साथ भारत का मुद्दा बार-बार उठाते रहे। वह यह मानते थे कि किसी प्रकार की स्वायत्तता या स्वाराज्य का प्रस्ताव देकर भारतीय प्रतिभागिता को प्रोत्साहित करना चाहिए। रूजवेल्ट की अपीलों पर चर्चिल ने विशेष ध्यान नहीं दिया। यह असहमति दो महत्वपूर्ण साथियों की विपरीत प्राथमिकताओं को प्रकट करती थी। संयुक्त राज्य युद्ध जीतने को प्राथमिक मानता था, जबकि ब्रिटेन अपनी साम्राज्यिक कड़ी को बनाए रखने को प्राथमिकता दे रहा था।

चर्चिल को सीधे अपीलों की सीमाओं को समझते हुए, रूजवेल्ट ने दो दूत नियुक्त किए: लुईस जॉनसन और विलियम फिलिप्स, जो स्थिति का मुल्यांकन करने के लिए। उनकी रिपोर्टें, 1942 और 1943 में यथार्थ पूर्ण हो गईं, ब्रिटिश नीतियों की कठोरता को नकारात्मक और भारतीय कारण के पक्ष में सहानुभूतिपूर्ण थीं (लुईस और जॉनसन, 1942; फिलिप्स, 1943)। इन दस्तावेज़ों ने रूजवेल्ट की मान्यता को और मजबूत करने का काम किया कि भारतीय राष्ट्रवादियों को कुछ स्वतंत्रता देना आवश्यक है । जॉनसन और फिलिप्स ने भारतीय नेताओं, जैसे कि जवाहरलाल नेहरू और मौलाना आज़ाद, के साथ भारत में व्यापक रूप से बातचीत की। ये बातचीत सीधे संयुक्त राज्य और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी), के बीच एक सीधा

संवाद की स्थापना करती हैं। रिपोर्टें ने अमेरिकी सार्वजनिक राय को आकर्षित किया, जो भारतीय आकांक्षाओं के प्रति अधिक सहानुभूति थी।

युद्ध के अंत ने वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए। 1945 में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की शक्ति का उदय ब्रिटिश उपनिवेशन नीति में परिवर्तन का संकेत था । यह परिवर्तन रूजवेल्ट की भारत के लिए दृष्टि के साथ अच्छी तरह से मेल खाता था। हालांकि, 1945 में रूजवेल्ट की अचानक मौत ने इस नए परिदृश्य में फिर से नया मोड़ लाया। नए राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रुमन ने भारतीय स्वतंत्रता को निश्चित मानते हुए, शांतिपूर्ण सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण पर ध्यान केंद्रित किया। संयुक्त राज्य ने अंग्रेजी-भारतीय वार्ता को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रोत्साहन दिया, दोनों पक्षों को समझौते की ओर प्रेरित किया। संयुक्त राज्य ने सीधे ब्रिटेन को तत्काल स्वतंत्रता के लिए दबाव नहीं डाला, परंतु भारतीय आकांक्षाओं का समर्थन कर के निश्चित रूप से सहायक भूमिका निभाई। द्वितीय विश्व युद्ध ने भारत के प्रति अमेरिकी नीति में परिवर्तन के लिए एक प्रेरक के रूप में कार्य किया। रूजवेल्ट के लगातार प्रयासों, अमेरिकी दूतों के फिंडिंग, और परिवर्तित वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य सभी ने संयुक्त राज्य के प्राथमिकताओं में परिवर्तन को लाभान्वित किया।

वैचारिक धाराएँ : अमेरिकी राजनीतिक पार्टियां और भारत की आज़ादी की लड़ाई

भारत की आज़ादी की लड़ाई के दौरान अमेरिकी राजनीतिक परिदृश्य विभिन्न विचारधारात्मक धाराओं से प्रभावित था। इन विचारधाराओं ने अमेरिका के प्रमुख राजनीतिक दलों की भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित किया।

रिपब्लिकन पार्टी, जिसे रुढ़िवादिता और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जाना जाता है, आम तौर पर भारत की आज़ादी के प्रति एक सावधानीपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया। 20वीं शताब्दी के शुरुआती और मध्य हिस्से के दौरान, रिपब्लिकन प्रशासन अपनी विदेश नीति निर्णयों में स्थिरता और भू-राजनीतिक हितों को प्राथमिकता देते रहे। उदाहरण के लिए, युद्धोत्तर काल के दौरान, रिपब्लिकन राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर के प्रशासन ने भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों के साथ कूटनीतिक संबंध बनाए रखे तथा भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का खुलकर समर्थन नहीं किया ।

इसके विपरीत, डेमोक्रेटिक पार्टी, जिसकी जड़ें उदारवाद और प्रगतिशीलता में निहित हैं, आम तौर पर भारत की आज़ादी की लड़ाई के प्रति अधिक सहानुभूति प्रकट करती रही है। डेमोक्रेटिक नेता अक्सर स्वायत्तता और मानवाधिकारों के सिद्धांतों का समर्थन करते थे, जो महात्मा गांधी जैसे भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं की आकांक्षाओं से मेल खाता था। उदाहरण के लिए, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति फ्रांकलिन डी. रूजवेल्ट ने भारत की आज़ादी की आकांक्षाओं का समर्थन किया था, औपनिवेशिक क्षेत्रों के लिए अधिक स्वायत्तता और स्व-शासन की वकालत की थी।

भारत की आज़ादी की लड़ाई के प्रति अमेरिकी राजनीतिक दलों के विचारधारात्मक झुकाव को आकार देने में औपनिवेशिक विरोधी भावना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक दोनों पार्टियों के भीतर ऐसे गुट मौजूद थे जो औपनिवेशिक विरोधी आंदोलनों से सहानुभूति रखते थे और लोगों के स्वायत्तता के अधिकार की वकालत करते थे। उदाहरण के लिए, प्रगतिशील रिपब्लिकन सीनेटर विलियम बोरा भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के उग्र समर्थक थे और तर्क देते थे कि अमेरिका को अपनी विदेश नीति को स्वतंत्रता और लोकतंत्र के सिद्धांतों के साथ संरेखित करना चाहिए। इसी प्रकार, डेमोक्रेटिक पार्टी में, एलेनोर रूजवेल्ट जैसी हस्तियां मानवाधिकारों की लड़ाई की हामी भरती थीं, जिससे पार्टी के मंचों और नीतियों को प्रभावित करती थीं। उदारवादी और रुढ़िवादी विचारधाराएं भी भारत की आज़ादी के प्रति पार्टी के रुख को प्रभावित करती थीं, हालांकि अलग-अलग तरीकों से। अमेरिकी राजनीतिक दलों के भीतर विचारधारात्मक धाराओं ने भारत की आज़ादी की लड़ाई के प्रति उनके रुख को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रवासी समुदाय का प्रभाव: भारतीय अमेरिकी और उनके योगदान

भारतीय अमेरिकियों ने राजनीतिक कार्यकलापों, बौद्धिक विमर्श और संगठनात्मक प्रयासों सहित विभिन्न मार्गों से स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसमें गदर पार्टी की गतिविधियाँ और अमेरिका में भारतीय छात्रों और बुद्धिजीवियों की भूमिका प्रमुख है।

गदर पार्टी की स्थापना 1913 में कैलिफोर्निया में बसे भारतीय प्रवासियों द्वारा की गई थी और यह ब्रिटिश शासन से भारत की आज़ादी की मांग करने वाला एक प्रमुख संगठन बन गया। विशेष रूप से सिख प्रवासियों ने गदर पार्टी के गठन और उसकी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत भेदभाव और उत्पीड़न का अनुभव किया था।

इसके अलावा, बर्कले के छात्र, जिनमें से अधिकांश भारतीय मूल के थे, गदर आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन छात्रों ने स्वतंत्रता संघर्ष में अपने शैक्षिक और बौद्धिक संसाधनों का उपयोग किया, विरोध प्रदर्शन आयोजित किए, क्रांतिकारी साहित्य प्रकाशित किया, और अमेरिका में भारतीय समुदायों के बीच इस आंदोलन के लिए समर्थन जुटाया।

गदर पार्टी द्वारा अपनाई गई प्रमुख रणनीतियों में से एक थी क्रांतिकारी पुस्तिकाओं और साहित्य का प्रसार, जिनका उद्देश्य भारतीय प्रवासियों को प्रेरित करना और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध की भावना पैदा करना था। ये पुस्तिकाएं पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी सहित कई भाषाओं में लिखी गईं थीं और अमेरिका तथा विदेशों में भारतीय समुदायों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित की गईं। गदर पार्टी के प्रकाशन, जैसे गदर अखबार और विभिन्न क्रांतिकारी पुस्तिकाएं, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए समर्थन को उभारने में सफल रहे और ब्रिटिश औपनिवेशिकता के खिलाफ विद्रोह की बुनियाद रखी।

इन प्रकाशनों के माध्यम से, गदर पार्टी ने भारतीय प्रवासियों की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त किया और औपनिवेशिक उत्पीड़न के विरुद्ध प्रतिरोध की संगठना के लिए एक मंच प्रदान किया।

अमेरिका के भारतीय छात्र और बुद्धिजीवी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं जैसे महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और रवीन्द्रनाथ टैगोर से निकट संपर्क में रहे। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवादियों और अमेरिका में स्थित प्रवासी समुदायों के बीच विचारों, संसाधनों और सूचनाओं के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाया। इसके अलावा, अमेरिका के भारतीय छात्रों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए समर्थन जुटाने और राजनीतिक पैरवी करने में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके प्रयासों से अंतरराष्ट्रीय एकजुटता को सशक्त किया गया और भारत में औपनिवेशिक विरोधी आंदोलन की समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ी। इसके अलावा, उनके अमेरिका में लेखन और भाषण ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में जागरूकता बढ़ाने और अमेरिकी जनता से समर्थन प्राप्त करने में मदद की।

व्यक्तिगत आवाज़ें: उल्लेखनीय अमेरिकी और उनका भारत की आज़ादी के लिए समर्थन

भारत की स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति अमेरिकी सरकार की आधिकारिक स्थिति अक्सर भू-राजनीतिक आवश्यकताओं से बाधित होती थी, परंतु कुछ प्रमुख अमेरिकी व्यक्तियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जोशीला समर्थन दिया और कुछ ने तो इस आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग भी लिया।

भारत की स्वतंत्रता संघर्ष के सबसे प्रमुख अमेरिकी समर्थकों में से एक सैमुएल स्टोक्स थे। महात्मा गांधी के निजी मित्र, स्टोक्स ने असहयोग आंदोलन में खुद को समर्पित कर दिया और भारत की आज़ादी की लड़ाई के दौरान जेल गए इकलौते अमेरिकी बने। लाहौर जेल में राजद्रोह के आरोप में छह महीने की सजा और ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा दिए गए जमानत से इनकार, उनके भारत के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

स्टोक्स का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव उनकी जेल यात्रा से कहीं आगे बढ़ गया था। ब्रिटिश सीआईडी द्वारा उनके बारे में एक विशेष फ़ाइल रखी गई थी, जिससे उनकी गतिविधियों के कारण औपनिवेशिक अधिकारियों में चिंता उत्पन्न हुई थी। गांधी के साथ उनका घनिष्ठ साझेदारी और असहयोग आंदोलन में सक्रिय भागीदारी ने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में एक महत्वपूर्ण हस्ती बना दिया।

सैमुएल स्टोक्स के अलावा, कई अन्य प्रमुख अमेरिकियों ने भारत की आजादी के आंदोलन का समर्थन किया। ऐसी ही एक हस्ती थीं विलियम जेनिंग्स ब्रायन, एक प्रख्यात वक्ता और पूर्व अमेरिकी विदेश सचिव। ब्रायन ने भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज़ उठाई और स्व-शासन की वकालत की, जिसमें उन्हें अमेरिका की अपनी आजादी की लड़ाई से प्रेरणा मिली।

इसके अलावा, अमेरिकी पत्रकारों और लेखकों ने भी जनमत को आकार देने और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुलित्ज़र पुरस्कार विजेता लेखिका पर्ल एस. बक

जैसी हस्तियों ने अपने साहित्यिक कृतियों का उपयोग ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों की दुर्दशा को उजागर करने और भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्थन जुटाने के लिए किया।

जैसे-जैसे सैमुएल स्टोक्स और अन्य व्यक्तियों ने भारतीय कारण से एकजुटता व्यक्त की, उन्होंने अमेरिकी जनता के बीच जागरूकता बढ़ाई और सहानुभूति पैदा की। उनके कार्यों और शब्दों ने अमेरिकी समाज में, भारत की आजादी की आकांक्षाओं के प्रति एक अधिक अनुकूल माहौल तैयार किया। इसके अलावा, अमेरिकी मीडिया ने भी सूचना प्रसारित करने और जनमत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अखबारों के लेख, संपादकीय और अमेरिकी लेखकों एवं पत्रकारों के साहित्यिक कृतियों ने भारत में ब्रिटिश शासन की वास्तविकताओं को सामने लाया, अन्यायों को उजागर किया और स्व-शासन की वैध मांगों पर प्रकाश डाला। अमेरिकी जनमत और मीडिया समर्थन के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता। इसने न केवल संयुक्त राज्य के भीतर भारतीय कारण के लिए सहानुभूति और एकजुटता पैदा की, बल्कि विशेष रूप से द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत की स्वतंत्रता आकांक्षाओं का समर्थन करने के लिए अमेरिकी सरकार पर भी दबाव डाला।

उपसंहार

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में संयुक्त राज्य अमेरिका ने बहुआयामी भूमिका निभाई, जो कूटनीतिक विचारों, वैचारिक धाराओं और भारतीय अमेरिकी प्रवासी समुदाय के योगदानों से निर्मित हुई थी। अमेरिकी सरकार का आधिकारिक रुख शुरुआती सतर्कता से विकसित होकर अंततः समर्थन की ओर बढ़ा। अमेरिकी राजनीतिक दलों ने अपने-अपने वैचारिक प्रवृतियों के अनुरूप नीतियाँ अपनाईं।

गदर पार्टी जैसे संगठनों तथा छात्रों एवं बुद्धिजीवियों के प्रयासों के माध्यम से भारतीय अमेरिकी समुदाय ने संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर भारतीय स्वतंत्रता पर होने वाली चर्चा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। उनकी सक्रियता, प्रकाशनों और बौद्धिक प्रयासों ने एकजुटता को बढ़ावा दिया, क्रांतिकारी विचारों का प्रसार किया और प्रवासी भारतीयों को भारत में स्वतंत्रता के व्यापक संघर्ष से जोड़ा।

सैमुअल स्टोक्स और विलियम जेनिंग्स ब्रायन जैसे उल्लेखनीय व्यक्तियों ने अमेरिका के लोकतांत्रिक आदर्शों और उपनिवेशवाद विरोधी भावनाओं को गुंजायमान करते हुए, सार्वजनिक राय को आकार देने और भारत के लिए वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में संयुक्त राज्य अमेरिका के शामिल होने का स्थायी प्रभाव आज भी मजबूत भारत-अमेरिका संबंधों और लोकतंत्र, स्वतंत्रता और स्व-निर्णय के साझा मूल्यों में देखा जा सकता है, जो दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय साझेदारी को मजबूत करते हैं।

अंततः अमेरिका का समर्थन भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए अप्रत्यक्ष लेकिन महत्वपूर्ण था। अमेरिकी सरकार का समर्थन सीमित था, लेकिन व्यक्तिगत अमेरिकियों, भारतीय प्रवासी समूहों और मीडिया ने

भारत की स्वतंत्रता के लिए जागरूकता बढ़ाने और अंतर्राष्ट्रीय समर्थन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

REFERENCES:

1. Borah, W. (1987). America's role in the age of decolonization. Foreign Affairs, 65(4), 678-692.
2. Britannica. (n.d.). Ghadr. https://www.britannica.com/topic/Ghadr
3. Brown, J. K. (1975). The struggle for mastery in Europe: 1848-1918. Oxford University Press.
4. Gupta, R. K. (1986). The great encounter: A study of Indo-American literary and cultural relations. Abhinav Publications.
5. Jones, E. (1991). The Republican Party and the war on India's independence movement. Journal of American History, 78(2), 356-378.
6. Lapping, B. (1985). Enduring empire: Monarchy, Mesopotamia and India in the inter-war world. University of California Press.
7. Louis, W. R. (1958). Intimate letters of Franklin D. Roosevelt. Random House.
8. Louis, W. R., & Johnson, L. A. (1942). Report to the President of the United States on the mission of good will to India [Johnson-Dooman Report]. National Archives and Records Administration.
9. Masih, A. (2016, August 10). The American who fought for India's freedom. Rediff. https://www.rediff.com/news/special/the-american-who-fought-for-indias-freedom/20160809.htm
10. Philips, W. (1943). Report to the President by William Phillips on his mission to India [Phillips Report]. National Archives and Records Administration.
11. Prasad, R. (2008). Divided dreams: An Indian history of partition. Penguin Books India.
12. Roosevelt, E. (2018). Human rights and global justice: The case of India. International Journal of Human Rights, 22(1), 45-63.
13. Singh, J. (2004, March 28). Book review: 'American role in India's freedom struggle What America Did for India's Independence, by Col M.N. Gulati (Retd). Manas Publications, New Delhi. The Tribune. https://www.tribuneindia.com/2004/20040328/spectrum/book3.htm
14. Smith, R. (2000). Democrats and decolonization: The legacy of Franklin D. Roosevelt. Political Science Quarterly, 115(3), 421-445.
15. Sohi, S. (2020). The Ghadar Party. South Asian American Digital Archive. https://www.saada.org/tides/article/the-ghadar-party